**चलो बात करें पन्नों की**

चलो बात करें पन्नों की, जो बनाते है किताब

हर पन्ना रखता है, अध्याय का हिसाब

किताब का हर पन्ना, होता है अनमोल

कोई कही बिखर जाये, तो अध्याय का नहीं मोल

कोई पन्ना सरल होता है, तो कोई होता गमभीन

किसी में मजाक होता है, तो कोई होता संगीन

हर पन्ने का अपना एक अलग मिजाज़ होता है

मगर किताब को बनाने में पन्ना बहुत ख़ास होता है

पन्ने सिर्फ पलटे जियें, तो कोई नहीं मोल

अगर इन्हें समझा जायें, तो बदलता है दृष्टिकोण

चाहे पन्ना सरल हो, चाहे हो गमभीन

किताब के लिए तो जरूरी है, भले ना हो रंगीन

ये पन्ने ही है, जो देते है किताब को आधार

सारे आधारों को जोड़कर, बनता है सुविचार

पन्ने ज़िन्दगी का हर लम्हा दर्सतें है

पन्नो के साथ साथ, अध्याय भी बदल जातें है

इंसान एक पन्ना है और इंसानियत खुली  किताब

कोई इंसान सरल है, तो कोई गरम मिजाज़

हर इंसान जरूरी है, इंसानियत के वास्ते

चाहे भले क्यूँ ना हो, हमारे अलग अलग रास्ते

किशोर पाठक